स्पष्ट है कि उपरोक्त रूपों में नयी लौह तकनीकि का जो अलग-अलग प्रयोग दिखता है, प्रगति इसमें सबसे आगे दिखायी पड़ता है। निश्चित रूप से नयी लौह तकनीकि के प्रयोग के कारण कृषि उत्पादन की प्रक्रिया इस क्षेत्र में क्रांतिकारी रूप से बदल गयी। प्रगति में N.B.P. संस्कृति के उत्खनन स्थलों से हमें सिंचाई व्यवस्था के प्रमाण मिले हैं जो कृषि अर्थव्यवस्था में होनेवाले क्रांतिकारी परिवर्तन को स्पष्ट करता है। खैराडीह के उत्खनन से पता चलता है कि 700-200 B.C. के मध्य चावल, गेहूँ, जौ, मटर आदि की खेती हो रही थी। इस तरह अगर पालि एवं प्राकृत साहित्यके के साक्ष्यों को देखा जाये तो 600 ई० पू० में कई तरह के नयी फसलों की शुरुआत के प्रमाण मिलते

है। सर्वप्रथम इसी समय पालि साहित्य में 'सरसों' की खेती के प्रमाण मिलते हैं। यह भी पता चलता है कि दालों की अलग-अलग किस्मों की खेती इस काल में शुरू हो चुकी थी। यह भी स्पष्ट है कि जिसके लिये गहरी जुताई की आवश्यकता थी, उस काल में शुरू हो चुकी थी। तात्पर्य यह है कि नई लौह तकनीकि व सिंचाई की व्यवस्था ने कृषि उत्पादन में न केवल विविधता को जन्म दिया बल्कि अधिशेष उत्पादन भी पहले की तुलना में बहुत अधिक बढ़ चुका था। मगध के उत्कर्ष में परिवर्तन के ये कारक काफी महत्वपूर्ण थे।

मगध की सर्वोच्चता की स्थापना तीसरे स्तर तक चावल रोपने की तकनीकि का परिणाम था। चूंकि चावल की इस तरह की खेती उत्पादकता को बढ़ा देती है, इतिहासकारों ने इस समय के सन्दर्भ में यह निष्कर्ष निकाला है कि इस प्रक्रिया से उत्पादकता गेहूं की खेती अथवा बो कर की जानेवाली चावल की खेती से 250% तक अधिक होती थी है। स्पष्ट है कि इसने अधिशेष के उत्पादन को काफी बढ़ा दिया। अगर मगध की भौगोलिक स्थिति को देखें, तो वह गंगा-सोन दोआब में बसा हुआ है व उसका निर्माण गंगा तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी (जवजाऊ मिट्टी) से हुआ है। यही नहीं, मगध भौगोलिक रूप से मानसूनी वर्षा के उस क्षेत्र में पड़ता है जहां वर्षा की वार्षिक मात्रा 150-200 C.M. तक है। स्वाभाविक रूप से मगध में बड़े पैमाने पर धान या अन्य फसलों की खेती संभव थी। हमें इस बात के पुरातात्विक प्रमाण तो मिले ही हैं, साहित्यिक साक्ष्य भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। शतपथ ब्राह्मण (1000 ई०पू०) में पलाशस किस्म के विधि का उल्लेख है जिसे चावल की रोपनी वाली किस्म

जारी.....